पर मुझे प्यारी बरारब, जिन जिमी आए रसूल।
मेहेर नजर महंमद की, पर काफर गए सब भूल।। २८ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मुझे तो अरब की जमीन प्यारी है। जहां पर रसूल साहब सबसे पहले आए और उन्होंने अपनी नजरे-करम से खुदाई ज्ञान फैलाया। काफिर लोग सब भूल गए।

पीछे केहेर नजर करी, सो भी वास्ते मेहेर।
पर काफर जो उलटे, सो देखे सब जेहेर।। २९ ।।

अब आखिरत के समय में इमाम साहब श्री प्राणनाथजी ने ऐसे काफिरों पर अपनी कड़ी नजर की, वह भी उनको सीधे रास्ते पर लाने के लिए, परन्तु काफिर लोग उलटा ही सोचते हैं और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) से दुश्मनी करते हैं।

नोट : यह प्रसंग दिल्ली का है, जहां कहर नजर कर औरगंजेब को कुरसी से गिराया था।

केहेर नजर देखाए के, फेर लिए मेहेर मांहें।
मुस्लिम नाम धराए के, बैठे मुस्लिम की छांहें।। ३० ।।

कड़ी नजर दिखाकर फिर अपनी नजरे-करम से उनको चरणों में ले लिया। अपना नाम भी मुसलमानों का रखकर (सैयद मुहम्मद इबन इस्लाम) उनके अन्दर बैठ गए।

अब तो लगे सब बंदगी, आया भला आकीन।
नर नारी हक कलमें, कायम खड़े हैं दीन।। ३१ ।।

अब सबको यकीन आ गया और सब बन्दगी करने लगे। अब सब नर-नारी हक की कलमे (तारतम) को सच्चा मानकर एक दीन (निजानन्द धर्म) में आ गए।

पेहेले बीतक रसूलसों, सो भी सुनो नेक बोल।
आरब समझें आरबी, दोए कहूं लुगे दिल खोल।। ३२ ।।

पहले रसूल साहब की थोड़ी सी हकीकत बताता हूं जिनके वचनों को सुनो, क्योंकि अरब के रहने वाले अरबी भाषा में ही समझेंगे, इसलिए दो-चार शब्द दिल खोलकर अरब वालों के लिए कहता हूं।

॥ प्रकरण ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ ११७७ ॥

सनन्ध–आरबी की

सम्मेन कलिम कलामी, नास कुरब अना कसीर।
नेक मैं कहुं बोली मेरी, आदमी कबीले मेरे बहुत हैं।
अना हाकी हकाइयां कलूब अना, लिसान इस्म कबीर।। १ ।।
मैं कहुं बातें दिल मेरे की, साथ मेरे नाम बड़े हैं।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि अब मैं अरब की बोली में बोलता हूं। अरब में मेरे मानने वाले बहुत हैं। मैं अपने दिल की बात कहता हूं। मैं कई नामों से जाना जाता हूं।

Nijanand App

फआल नफस इस्म इमाम, बाद कलिम कुल्ल नास।
धरया अपना नाम इमाम, पीछे कहेंगे सब आदमी।
बला किन ला अरफ कुरान, अना मिन्हुम कुल्ल लिरास।। २ ।।
ए पर नहीं समझें कुरान, मैं इनमें से सब लिए साथ सिरके।।

पहले मैंने अपना नाम इमाम रखा। फिर पीछे मुझे सब इमाम मेंहदी कहेंगे। इतने पर भी लोग कुरान को नहीं समझेंगे कि मैं इन सबके लिए आया हूं।

अल्लजी हकाइयां कलूब अना, मा खफी मिन्कुम।
जो बातें दिल मेरे की हैं, ना छिपाऊं तुम से।
कुम्यकून कुरब अना, अल्लजी रूह मुस्लिम।। ३ ।।
तुम हो कबीले मेरे के, जो कोई रूहें मुस्लिम हैं।।

जो मेरे दिल की बातें है वह मैं तुमसे नहीं छिपाऊंगा, क्योंकि जितने भी मोमिन यकीन वाले हैं वह सब मेरे साथी हैं।

लेस खबर मा कुम कमा, अल्लजी बरारब।
नहीं है खबर तुमको ऐसी, जैसी कछू जिमी अरब की।
हाजा मुस्लिम कुल्ल हुंम, फआल अली मिन्जरब।। ४ ।।
ए मुसलमान सारे जो हैं, किए अली ने मोहों मार के।।

अरब के रहने वाले मुसलमानों को यकीन नहीं था। अली साहब ने उन्हें मार-मारकर सीधा किया।

व ला लहुमा ऐयून, खारज व ला दखल।
और नहीं हैं इनको आंखें, बाहेर की और नहीं है अन्दर की।
व लहुम लेस इगनू, व लहुम लेस अकल।। ५ ।।
और इनोंके नहीं हैं कान, और इनोंको नहीं है अकल।।

अरब के मुसलमानों के न बाहर की आंखें हैं और न अन्दर से ही विवेक है। इनके कान नहीं हैं और न ही इनको अक्ल है।

जरब अना वज्हे मिन्सेफ, फआल अना मुसलमीन।
मारे मैं मोहों समसेर के से, किए मैंने मुसलमान।
लाकिन जाहिल इमन, व ला ए जाआ यकीन।। ६ ।।
पर मूरख जो हैं इमनके, और नहीं इनोंको आया आकींन।।

ऐसे जाहिल लोगों को तलवार के जोर से मुसलमान बनाया। फिर भी इमन (अरब, ईरान, इराक, और फारस के मुसलमान) के मूर्खों को यकीन नहीं आया।

लिहाजा कमा काल इमन, ला बारकला मुसलमीन।
इस वास्ते ऐसा कह्या इमनको, नहीं हैं बरकत इन मुसलमानों को।

बारकला धन्य ला बारकला धृक

Nijanand App

कुलू बारकला हिन्द मुस्लिम, खुजू रास कलाम यकीन।।७।।
कही बरकत हिन्द के मुसलमानों को, लिए सिर कलाम आकीन करके।।

इस वास्ते इमन के मुसलमानों को बरकत नहीं है, क्योंकि उनका यकीन उठ गया। हिन्दुस्तान के मुसलमानों को यकीन होने से हिन्द में बरकत आ गई।

हाजा फास खबर इन्द कुंम, यज्लिस हिन्द सुब्हान।
ए जाहेर खबर पास तुमारे है, बैठेंगे हिन्द में खावंद।
कमा अवल काल रसूल, अना हस्ना हिन्द मकान।।८।।
ऐसा पहले कह्या रसूल ने, मेरा नेक है हिंद स्थान।।

हे हिन्द के मुसलमानो! तुम्हें पहले से ही खबर है कि खुदा तुम्हारे पास हिन्द में आकर बैठेंगे। रसूल साहब ने यही पहले से कहा कि आखिरत के समय में मैं हिन्दुस्तान आऊंगा।

व ला लेतनी मौला रदो, अल्लजी हाकीयतो महंमद।
और न कदी खावन्द रद्द करे, जो कछू कह्या है महंमद ने।
लागिल मुस्लिम इमाम, जा आ हिंदल अर्ज।।९।।
वास्ते इन मुसलमानों के इमाम मेंहदी, आया हिन्द की जिमी।।

मुहम्मद साहब ने जो कुरान में कहा है, उसे खुदा रद्द नहीं करेगा, इसलिए हिन्द के मुसलमानों के वास्ते ही इमाम मेंहदी हिन्द में आए।

कुंम अल्लजी मुस्लिम, रसूल कुल्लहो कलिम।
तुम जो कोई मुस्लिम हो, रसूल ने सबको कहा है।
यजाआ यकीनल्कुम, खैर तल्बो हिन्द मुस्लिम।।१०।।
आवेगा यकीन तुमारे तांई, पनाह मांगो हिन्द के मुसलमानों से।।

मुहम्मद साहब ने सारी दुनियां के मुसलमानों को कहा कि तुम्हें यकीन तभी आएगा जब तुम हिन्द के मुसलमानों की पनाह में जाओगे।

यव्सरो हाजा कलमा, दाखल कलूब कुम्म।
देखो एह वचन, बीच दिल तुमारे के।
सैयबो विलाद कुल्हुम, खैर तलबो हिन्द मुस्लिम।।११।।
छोड़ो विलायत सबकी, बखसीस मांगो हिंद के मुसलमानों पें।।

इन वचनों को अपने दिल में विचार कर देखो और सारी दुनियां के हज छोड़कर हिन्द के मुसलमानों से बख्शीश मांगो।

अल्लजी कलिमा रसूलना, खुजू मुहब्ब कलाम।
जिन किनों ने वचन रसूल मेरे के, लिए प्यारसों बोल।

Nijanand App

लागिल हिन्द मुस्लिम, हुबहुम जाआ इमाम।। १२ ।।
वास्ते हिन्द के मुसलमानों के, प्यार कर इनों पर आये इमाम मेंहदी।।

जिस किसी ने भी मेरे रसूल साहब के इन वचनों को प्यार से ग्रहण किया, वह समझेंगे कि हिन्द के मुसलमानों को प्यार करके इमाम मेंहदी हिन्द में आए हैं।

अल्लजी रसूल सैयबो, ऐया अना फआली हुम।
जो रसूल ने छोड़ दई, क्या मैं करूं उसको।
खला अना अर्ज आरब, जाआ अना इन्द कुम।। १३ ।।
छोड़ी हम जिमी अरब की, आए हम पास तुमारे।।

जिस अरब की जमीन को रसूल साहब ने ही छोड़ दिया है उसको अब मैं क्या करूं? इसलिए हे दुनियां के मुसलमानो! तुम भी अरब की जमीन छोड़कर हिन्द में इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के पास आकर कहो कि हम तुम्हारी शरण में आए हैं।

इस्मयो हिन्द मुस्लिम, अनी कलिम सिदक।
सुनो हिन्द के मुसलमानों, मेरे कहना है सांच।
यकीन कान इन्द कुम, व कायमुल्कलमे हक।। १४ ।।
अकीन है पास तुमारे, और कायम हो साथ कलमे हक के।।

हिन्द में आकर तुम हिन्द के मुसलमानों को कहो कि मैं सच कहता हूं कि यकीन भी तुम्हारे पास है और हक का कलमा भी तुम्हारे पास है।

अवल स्वाल रसूल ना, व लाए आरफ अहद।
पहले बोल रसूल मेरे के, और नहीं समझया कोई आदमी।
दलहिन कुल्ल य आरिफो, जाआ कलिम महंमद।। १५ ।।
अब सब यह समझेंगे, आया वचन महम्मद साहेब का।।

पहले मेरे रसूल साहब के इन वचनों को कोई नहीं समझा था। अब इमाम मेंहदी आ गए हैं तो सबको यकीन आ जाएगा कि रसूल साहब के वचन सच्चे थे।

अल्लजी जाआ कुम मुस्लिम, हाजा लागिल कुम फआल सुगल।
जो आए हो तुम मुस्लिम, यह खातिर तुमारे किया है खेल।
इब्सर सुगल अना यरजा, अल्लजी मुस्लिम कुल्ल।। १६ ।।
देख खेल हम फिरेंगे, जो कोई है मुस्लिम सो सब।।

हे हिन्द के मुसलमानो (सुन्दरसाथ)! यह खेल तुम्हारे लिए ही बनाया है और तुम ही यहां आए हो। अब खेल देख करके हम सभी मुसलमान (सुन्दरसाथ) घर वापस जाएंगे।

अनी कुल्ल मुस्लिम वाहेद, अस्लू वाहिद मकानी।
हम सब मुस्लिम एक हैं, असल एक है ठौर हमारा।

Nijanand App

कांन हक वाहिद अना, गैर मुस्लिम लेस सांनी।। १७ ।।

है खसम एक हमारा, बिना मुस्लिम नहीं कोई दूसरा।।

हम सब मुसलमान (सुन्दरसाथ) एक हैं। हमारा घर एक है। हमारा खसम एक है। मुसलमानों (सुन्दरसाथ रूहों) के सिवाय वहां दूसरा कोई नहीं है।

अनी हबो कुल्ल मुस्लिम, लाकिन जायद सिंध।

मेरे प्यारे तमाम मुस्लिम, लेकिन अधिक हैं सिन्ध के।

हाल अना कलिमे सिंध मुस्लिम, बाद कलिम अना हिन्द।। १८ ।।

अब मैं कहत हूं सिंध के मुसलमानों को,

पीछे कहूंगी मैं हिन्द के मुसलमानों को।।

मुझे सारे मुसलमान (सुन्दरसाथ) प्यारे हैं, पर सिन्ध के मुसलमान खासकर प्यारे हैं, इसलिए सिन्ध के मुसलमानों (सुन्दरसाथ) को कहती हूं। पीछे हिन्द के मुसलमानों को कहूंगी।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। ११९५ ।।

सनन्ध–सिन्धी भाखा

कारण अरवा अर्सजी, चुआं सिन्ध गालाए।

जिन कलमें रसूल जे, सचो आकीन आए।। १ ।।

अर्स की रूहों के वास्ते सिन्ध की बोली में बोलती हूं। जिससे रसूल के कलमे पर तुम्हें सच्चा यकीन आ जाए।

मोमिन बलहा महंमद, जे सदाई जाण।

थियो सुहाग सभ केई, मेहेबूब अचो पाण।। २ ।।

मुहम्मद (श्यामाजी रूह अल्लाह) को मोमिन सदा से ही प्यारे हैं। उन सब मोमिनों को अब खुशी हुई, क्योंकि उनके लाडले खसम (प्रीतम) आए हैं।

चुआं कुजाडो हिंद के, सांई वडो डिन्यो सुहाग।

आयो रब आलम जो, सभनी उघड़्यो भाग।। ३ ।।

हिन्द के लोगों को क्या कहूं? खुदा ने इनको बड़ा सौभाग्य (सुख) दिया है जो सारी दुनियां के मालिक हिन्द में आए हैं और सबके भाग्य खुल गए हैं।

अदयूं रसूल पांहिजो, कोठे आयो इमाम।

आलम सभे उलट्यो, अची करे सलाम।। ४ ।।

हे बहन! अपने रसूल और इमाम मेंहदी बुलाने आए हैं। सारी दुनियां का यकीन इन पर आ गया है और सब आकर इनके चरणों में प्रणाम कर रहे हैं।

सिंधडी थियूं वधाइयूं, मीर पीर फकीर।

पुन्यूं उमेदूं सभनी, खिल्ली थेयां सभ खीर।। ५ ।।

सिन्ध की रहने वाली इन्द्रावती को सब ज्ञानी, अगुए, मीर, पीर और फकीर आ-आकर बधाइयां दे रहे हैं। सबकी चाहना पूरी हो गई और सब बड़े प्रसन्न होकर हंसते हैं।

Nijanand App